Cw – यीशु ने एक कटे हुए हाथ बाला एक आदमी को ठीक किया मत्ती
१२:९-१४; मरकुस ३:१-६; लूका ६:६-११ | 1

– Save This Page as a PDF–

यीशु ने एक कटे हुए हाथ बाला

एक आदमी को ठीक किया

मत्ती १२:९-१४; मरकुस ३:१-६; लूका ६:६-११

खोदाई: आराधनालय में तनाव का कारण क्या है? शुरुआत में सिकुड़े हुए हाथ वाला आदमी वहाँ क्यों था? येशुआ ने धार्मिक नेताओं से सवाल क्यों किया जैसा उसने किया था? यीशु ने सब्त के दिन चंगा करके फरीसियों का क्रोध क्यों भड़काया? क्या वह बस एक दिन और इंतज़ार नहीं कर सकता था? प्रभु के क्रोध का कारण क्या है? फरीसियों की प्रतिक्रिया क्या दर्शाती है? मरकुस ३:४-६ में क्या विडंबना है?

चिंतन: क्या आपके लिए यह स्वीकार करना आसान है या कठिन कि आप गलत हैं? आपको अपने विश्वास से संबंधित किसी चीज़ के बारे में अपना मन बदलने के लिए क्या करना होगा? आप उन जिद्दी लोगों को कैसे संभालते हैं जिनकी आप वास्तव में परवाह करते हैं, लेकिन अपनी विनाशकारी सोच या कार्यों को नहीं बदलते हैं? वह “सूखा हाथ” क्या है जिसे यीशु अभी आप में ठीक कर रहे हैं? सच्ची धार्मिकता कैसे प्राप्त होती है?

जैसे ही यीशु चारों ओर घूमे, महासभा के सदस्य उनके साथ गए (देखें Lg – महान महासभा)। जासूसों की तरह, उन्होंने उसका पीछा किया। क्या उन्होंने पीछे यात्रा की और दूरी बनाए रखी? या क्या उन्होंने यीशु के साथ यात्रा की और रास्ते में बातें कीं। हमारे पास जानने का कोई तरीका नहीं है क्योंकि बाइबल इस मुद्दे पर चुप है। लेकिन परेशान करने वाले मच्छरों की तरह जो गर्मी के दिनों में उसे अकेला नहीं छोड़ते थे, फरीसी और टोरा-शिक्षक उस पर आरोप लगाने के लिए कुछ खोजने के अपने दृढ़ संकल्प में दृढ़ थे। वे वास्तव में यीशु के बारे में सच्चाई की तलाश नहीं कर रहे थे, वे बस यह साबित करने का तरीका ढूंढ रहे थे कि उनके मसीहा होने का दावा झूठ था।

दूसरे सब्त के दिन यीशु आराधनालय में जाकर उपदेश कर रहा था, और वहां एक मनुष्य था जिसका दाहिना हाथ सूखा हुआ था। डॉक्टर लूका हमेशा हमें अधिक चिकित्सीय विवरण देते हैं, यह उनका दाहिना हाथ था जो सिकुड़ा हुआ था (मत्ती १२:९-१०ए; मार्क ३:१; लूका ६:६)। सिकुड़ा हुआ शब्द एक पूर्ण कृदंत कृदंत है, जो पिछले समय में पूर्ण किए गए कार्य के बारे में बताता है, लेकिन वर्तमान में समाप्त परिणाम दे रहा है। इसका मतलब है कि हाथ का सिकुड़ना किसी दुर्घटना या बीमारी के कारण हुआ था। वह आदमी इस विकृति के साथ पैदा नहीं हुआ था, लेकिन न ही यह जीवन के लिए खतरा था। यह कोई संयोग नहीं था। फरीसियों ने नाज़रीन का परीक्षण करने के लिए उस व्यक्ति को

Cw – यीशु ने एक कटे हुए हाथ बाला एक आदमी को ठीक किया मत्ती
१२:९-१४; मरकुस ३:१-६; लूका ६:६-११ | 2

चुना क्योंकि उसका उपचार जीवन-मृत्यु का मुद्दा नहीं होगा (नीचे देखें)। उन्होंने तर्क दिया कि यदि येशुआ वास्तव में ईश्वर होता, तो वह उसे ठीक करने के लिए अगले दिन तक इंतजार करता।

मौखिक ब्यबस्था (देखें Ei – मौखिक ब्यबस्था) ने तय किया कि शबात पर सभी काम वर्जित थे। फरीसी इस बारे में काफी निश्चित और विस्तृत थे। चिकित्सा सहायता केवल तभी दी जा सकती है जब कोई जीवन खतरे में हो। कुछ उदाहरण लेने के लिए – प्रसव पीड़ा से जूझ रही एक महिला को सब्त के दिन मदद की जा सकती है। गले की तकलीफ का इलाज हो सकता है। यदि कोई दीवार किसी पर गिरती है, तो यह देखने के लिए पर्याप्त जगह साफ की जा सकती है कि वह व्यक्ति मर गया है या जीवित है। यदि जीवित हो तो उस व्यक्ति की सहायता की जा सकती है; यदि मृत हो तो शव को अगले दिन तक नहीं हटाया जा सकता। एक फ्रैक्चर पर ध्यान नहीं दिया जा सका. मोच वाले हाथ या पैर पर ठंडा पानी नहीं डालना चाहिए। कटी हुई उंगली को सादे पट्टी से बांधा जा सकता है लेकिन मरहम से नहीं। दूसरे शब्दों में, अधिक से अधिक, किसी चोट को बदतर होने से रोका जा सकता है – लेकिन उसे बेहतर नहीं बनाया जा सकता।

सब्बाथ के सख्त रूढ़िवादी दृष्टिकोण को समझने का सबसे अच्छा तरीका यह याद रखना है कि एक यहूदी शब्बाथ पर अपने जीवन की रक्षा भी नहीं करेगा। मैकाबीन युद्धों में, जब प्रतिरोध छिड़ गया, तो कुछ यहूदी विद्रोहियों ने कुछ गुफाओं में शरण ली। सीरियाई सैनिकों ने उनका पीछा किया। जोसेफस, यहूदी इतिहासकार, हमें बताते हैं कि उन्होंने उन्हें आत्मसमर्पण करने का मौका दिया और उन्होंने ऐसा नहीं किया, इसलिए “सीरियाई लोगों ने सब्त के दिन उनके खिलाफ लड़ाई लड़ी, और उन्होंने बिना किसी प्रतिरोध और बिना किसी बाधा के यहूदियों को गुफाओं में जला दिया।” गुफाओं के प्रवेश द्वार। उन्होंने उस दिन अपना बचाव करने से इनकार कर दिया क्योंकि वे इतने संकट में भी सब्त का दिन तोड़ने को तैयार नहीं थे।” अतः इस मुद्दे पर फरीसी यहूदी धर्म का रवैया पूरी तरह से कठोर और अडिग था।

टोरा-शिक्षक और फरीसी महान महासभा के सामने सार्वजनिक रूप से यीशु पर आरोप लगाने का कारण ढूंढ रहे थे। कोई भी उनसे चूक नहीं सकता था क्योंकि आगे की सीटें सम्मानित अतिथियों के लिए आरक्षित थीं और वे वहीं बैठते थे। फरीसी वे लोग थे जिन्होंने एक सप्ताह पहले बार-बार मसीहा और उसके शिष्यों पर सब्बाथ तोड़ने का आरोप लगाया था (देखें Cv – मनुष्य का पुत्र सब्बाथ का प्रभु है)। वे वहां पूजा करने नहीं आये थे। वे यीशु की हर गतिविधि की जाँच करने के लिए वहाँ थे, इसलिए उन्होंने उस पर करीब से नज़र रखी। क्योंकि यह पूछताछ का दूसरा चरण था, उन्होंने उससे पूछा, “क्या सब्त के दिन चंगा करना उचित है” (मत्ती १२:१०बी; मरकुस ३:२; लूका ६:७)।

परन्तु यीशु ने जान लिया कि वे क्या सोच रहे हैं, और उस सूखे हाथ वाले मनुष्य से कहा, उठ, और सबके साम्हने खड़ा हो। इसलिए वह उठकर वहां मौजूद सभी लोगों के बीच

Cw – यीशु ने एक कटे हुए हाथ बाला एक आदमी को ठीक किया मत्ती
१२:९-१४; मरकुस ३:१-६; लूका ६:६-११ | 3

में खड़ा हो गया (मरकुस ३:३; लूका ६:८)। येशुआ ने टोरा-शिक्षकों और फरीसियों के आलोचनात्मक रवैये का उत्तर चमत्कार से दिया। वह जानता था कि उस आदमी की जान को ज़रा भी ख़तरा नहीं है। शारीरिक रूप से, यदि उसके उपचार में अगले दिन तक की देरी हो जाती, तो उसकी स्थिति अधिक खराब नहीं होती। हालाँकि, प्रभु ने सब कुछ सामने ला दिया, और उनके सामने एक चुनौती खड़ी कर दी। उसके पास छिपाने के लिए कुछ भी नहीं था.

एक रब्बी होने के नाते, प्रभु ने उनके प्रश्न का उत्तर अपने स्वयं के प्रश्न से दिया। तब मसीह ने उन से कहा, मैं तुम से पूछता हूं, सब्त के दिन क्या उचित है: अच्छा करना या बुरा करना? उसने उन्हें एक कोने में रख दिया। वे यह स्वीकार करने के लिए बाध्य थे कि अच्छा करना वैध था, और यह एक अच्छी बात थी जिसे उसने करने का प्रस्ताव रखा था। वे इस बात से इनकार करने के लिए भी बाध्य थे कि बुराई करना वैध था, और फिर भी, निश्चित रूप से उस आदमी को ऐसी दयनीय स्थिति में छोड़ना एक बुरी बात थी जब उसकी मदद करना संभव था। तब उस ने उन से पूछा, क्या किसी प्राण को बचाना या नाश करना उचित है (लूका ६:९)? परन्तु वे चुप रहे (मरकुस ३:४)। उसके लिए उनकी त्वरित वापसी नहीं हुई! क्रिया अपूर्ण है. वे चुप बैठे रहे। उनकी एक दर्दनाक, शर्मनाक चुप्पी थी। वे क्या कह सकते थे? जाहिर तौर पर कुछ भी नहीं।

लैव्यव्यवस्था १८:५ के आधार पर शाबात की कुछ आज्ञाओं को पिकुच नेफेश की अवधारणा के तहत अलग रखा जा सकता है, वस्तुतः एक जीवन को बचाने के लिए। चूँकि परमेश्वर ने हमारे जीवन को आशीर्वाद देने के लिए टोरा दिया था, इसलिए आज तक यह समझा जाता है कि जीवन बचाने के लिए जो कुछ भी आवश्यक है वह सब्त के दिन भी किया जा सकता है। महान मध्ययुगीन टीकाकार और चिकित्सक, मैमोनाइड्स ने यहां तक कि ऐसी आवश्यकता के लिए सब्बाथ को तोड़ने को “धार्मिक कर्तव्य” कहा (यद, शबात २:२-३)।

एक लंबी चुप्पी के बाद यीशु ने उनसे कहा: यदि तुम में से किसी के पास भेड़ हो और वह सब्त के दिन किसी गड्ढे में गिर जाए, तो क्या तुम उसे पकड़कर बाहर नहीं निकालोगे (ट्रैक्टेट शब्बत ११७बी)? ऐसी स्थिति में कोई भी यहूदी, जिसमें फ़रीसी भी शामिल है, अपनी भेड़ों को बचाने का कोई न कोई रास्ता खोज लेगा। यदि उसे ऐसा कुछ करने की अनुमति देने वाला कोई विनियमन होता, तो वह निश्चित रूप से इसका लाभ उठाता। यदि ऐसा नहीं होता, तो वह अपनी भेड़ों को बचाने के लिए ब्यबस्था को दरकिनार करने या मोड़ने का कोई रास्ता खोज लेता। तो या तो मौखिक ब्यबस्था के भीतर या मौखिक ब्यबस्था के बावजूद, वह अपनी भेड़ को पकड़ने और उसे गड्ढे से बाहर निकालने का कोई रास्ता खोज लेगा। फरीसियों ने येशुआ के साथ उस बिंदु पर बहस नहीं की, यह साबित करते हुए कि उनका उत्तर सही था।

प्रभु कल वी’चोमर रब्बीनिक सिद्धांत का उपयोग कर रहे थे, जिसका अर्थ है छोटे से बड़े की ओर। यदि किसी जरूरतमंद जानवर की मदद के लिए शब्बात के कुछ नियमों को अलग रखा जा सकता है, तो एक व्यक्ति भेड़ से कितना अधिक मूल्यवान है! फिर यीशु ने अपनी

Cw – यीशु ने एक कटे हुए हाथ बाला एक आदमी को ठीक किया मत्ती
१२:९-१४; मरकुस ३:१-६; लूका ६:६-११ | 4

बात को संक्षेप में बताते हुए कहा: एक मनुष्य भेड़ से कितना अधिक मूल्यवान है! इसलिए, सब्त के दिन अच्छा करना वैध है, किसी भी समय स्थिति उत्पन्न होने पर, न कि केवल जीवन-घातक स्थितियों में (मत्ती १२:११-१२)। किसी भी फरीसी ने यह स्वीकार नहीं किया होगा कि भेड़ें मनुष्यों जितनी मूल्यवान थीं, जो जानते थे कि वे ईश्वर की छवि में बनाई गई थीं। लेकिन वास्तव में, फरीसी अन्य लोगों के साथ अपनी भेड़ों की तुलना में कम सम्मान के साथ व्यवहार करते थे, क्योंकि अपने दिलों में वे अपने साथी यहूदियों सहित किसी और का सम्मान नहीं करते थे, प्यार तो बिल्कुल भी नहीं करते थे। फरीसियों के लिए एकमात्र चीज़ जो मायने रखती थी वह यहूदी धर्म का उनका स्व-धर्मी संप्रदाय और मनुष्यों की उनकी बहुमूल्य परंपराएँ थीं।

मसीह ने धार्मिक क्रोध से उन सभी को चारों ओर देखा। यह एक तेज़, व्यापक चकाचौंध थी। क्रोध के लिए तीन ग्रीक शब्द हैं। पहला है थुमोस, जो क्रोध के अचानक फूटने का संकेत देता है जो तुरंत शांत हो जाता है। दूसरे, ऑर्गे, मन की सहनशील आदत को परिभाषित करता है, जिसका उपयोग हर समय नहीं किया जाता है, बल्कि केवल तब किया जाता है जब अवसर की मांग होती है। परन्तु योग्यता यह है कि इसके साथ कोई पाप प्रेरणा सम्मिलित न हो। और तीसरा, पैरोर्गिस्मोस, जो क्रोध के अर्थ में क्रोध की बात करता है, जो कि पवित्रशास्त्र में निषिद्ध है। मार्क ऑर्गे शब्द का उपयोग करता है क्योंकि येशुआ का क्रोध एक धर्मी क्रोध था। परन्तु हमारे प्रभु का क्रोध अभी भी दु:ख से शांत था।

और, उनके हठीले दिलों पर बहुत व्यथित होकर, उसने
उस आदमी से कहा: अपना हाथ बढ़ाओ। जब यीशु ने अपना सार्वजनिक मंत्रालय शुरू करने के लिए मंदिर को साफ़ किया था तब वह जोशीले थे (देखें बी.एस. – यीशु द्वारा मंदिर की पहली सफाई), और वह यहाँ भी जोशीले थे। अत: उसने उसे बढ़ाया और उसका दाहिना हाथ बाएँ हाथ के समान स्वस्थ हो गया (मत्ती १२:१३; मरकुस ३:५; लूका ६:१०)। उसने उस व्यक्ति से कोई आस्था प्रदर्शित करने के लिए नहीं कहा। मसीहा के मंत्रालय में इस बिंदु पर, चमत्कार उसके मसीहाई दावों को प्रमाणित करने के लिए थे। लेकिन उनकी अस्वीकृति के बाद यह बदल जाएगा (देखें En– मसीह के मंत्रालय में चार कठोर परिवर्तन)। उसके हाथ को ठीक करने के लिए आगे बढ़कर, यीशु ने मौखिक ब्यबस्था के प्रति अपना तिरस्कार दिखाना जारी रखा।

Cw – यीशु ने एक कटे हुए हाथ बाला एक आदमी को ठीक किया मत्ती
१२:९-१४; मरकुस ३:१-६; लूका ६:६-११ | 5

इस घटना और सामान्य तौर पर सब्त के विवादों पर फरीसियों की प्रतिक्रियाएँ तीन प्रकार की हैं। सबसे पहले, फरीसी और मौखिक ब्यबस्था के शिक्षक क्रोधित थे, वस्तुतः पागलपन से भरे हुए थे (लूका ६:११ए)। उनकी भावनाएँ उन्हें नियंत्रित करती थीं। दूसरे, फरीसियों ने बाहर जाकर योजना बनाई कि वे यीशु को कैसे मार सकते हैं (मत्ती १२:१४; लूका ६:११बी)। वे हताश हो रहे थे और उन्होंने उपद्रवी रब्बी को मौके पर ही मार डाला होता अगर रोम ने पत्थर मारकर मौत की सज़ा देने की उनकी क्षमता नहीं छीन ली होती, और अगर वे उन कई लोगों से नहीं डरते थे जो उनका अनुसरण करते थे और उनकी प्रशंसा करते थे। महासभा ने ऐसा नहीं किया था पूछताछ के दूसरे चरण में वे अभी भी आधिकारिक निष्कर्ष पर पहुंचे हैं, लेकिन ऐसा लगता है कि कई फरीसी पहले ही अपने व्यक्तिगत निष्कर्ष पर आ चुके थे। यह ऐसा था, “मेरा मन बन चुका है, मुझे तथ्यों से भ्रमित मत करो!” तीसरा, फरीसी बाहर गए और हेरोदियों के साथ मिलकर योजना बनाने लगे कि वे गलील के विद्रोही रब्बी को कैसे मारें (मरकुस ३:६)।

फरीसी और हेरोदियों वास्तव में अजीब साथी थे क्योंकि वे राजनीतिक स्पेक्ट्रम के विपरीत छोर पर थे, और आमतौर पर कट्टर दुश्मन थे। हेरोदियों धार्मिक रूप से सदूकियों के साथ सहमत थे और राजनीतिक रूप से ये दोनों दल फरीसियों के विपरीत रहे होंगे जो हस्मोनियन विरोधी, हेरोदियों विरोधी और रोमन विरोधी थे। फरीसियों ने हेरोड्स और रोम के शासन को हटाने के लिए एक प्रलयकारी मसीहा साम्राज्य की तलाश की, जबकि हेरोदियों रोमनों को खुश करना और हेरोदियों शासन को संरक्षित करना चाहते थे। हालाँकि, हेरोदियों और फरीसियों ने येशुआ का विरोध करने के लिए एक साथ काम किया, क्योंकि वह एक नए साम्राज्य की शुरुआत कर रहा था जिसे कोई भी नहीं चाहता था। इसलिए, अंतिम विश्लेषण में, वे एक बात पर सहमत हो सकते हैं – यीशु को मारने की आवश्यकता थी।

फरीसी और टोरा-शिक्षक स्वयं-धर्मी पाखंडी थे (मत्ती २३:२४-२७), जो दूसरों की दृष्टि में खुद को सही ठहराना पसंद करते थे (लूका १६:१५)। उनके हृदय ठंडे, कठोर थे और उनकी धर्मपरायणता के कार्य केवल स्वयं को महिमामंडित करने के लिए थे, न कि यहोवा के लिए। येशुआ हा-मेशियाच के एक शिष्य को आत्म-धार्मिकता से परे जाना चाहिए जो अक्सर बाहरी पवित्र कृत्यों की विशेषता होती है (मत्ती ५:२०)। हमें बाहरी शेखी बघारने की नहीं, आंतरिक परिवर्तन की जरूरत है। रब्बी शाऊल ने मानव हृदय की स्थिति के बारे में लिखा: कोई भी धर्मी नहीं है, एक भी नहीं (रोमियों ३:१०)। एकमात्र धार्मिकता जो संभव है वह वह है जो हमें ईश्वर ने अपनी कृपा से, एक स्वतंत्र और उदार उपहार के रूप में दी है (इफिसियों २:८-९)। यह मसीहा के क्रूस के माध्यम से प्राप्त की गई धार्मिकता है और यह स्वयं से नहीं आती है, बल्कि पवित्र आत्मा के विश्वास और बपतिस्मा के माध्यम से आती है (देखें Bw – विश्वास के क्षण में परमेश्वर हमारे लिए क्या करता है)।

जैसे-जैसे हम इस सत्य को समझना शुरू करते हैं, हम यह समझने लगते हैं कि अकेले हम

Cw – यीशु ने एक कटे हुए हाथ बाला एक आदमी को ठीक किया मत्ती
१२:९-१४; मरकुस ३:१-६; लूका ६:६-११ | 6

ईश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते। हमारे आत्मनिर्भर जीवन को एक बच्चे के समान विश्वास और हमारे प्यारे पिता पर निर्भरता के पक्ष में छोड़ देना चाहिए। केवल वे ही लोग, जिन्होंने अपनी इच्छाओं को इस तरह से मौत के घाट उतार दिया है, वास्तव में यीशु का अनुसरण कर सकते हैं। सभी आत्म-धार्मिकता को त्यागकर, हम रब्बी शाऊल के साथ खुशी मनाते हैं और कहते हैं: मुझे मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया है और मैं अब जीवित नहीं हूं, लेकिन मसीह मुझमें जीवित है। अब मैं अपने शरीर में जो जीवन जीता हूं, वह परमेश्वर के पुत्र में विश्वास के द्वारा जीता हूं, जिसने मुझसे प्रेम किया और अपने आप को मेरे लिए दे दिया (गलातियों २:२०)।

प्रभु यीशु, हम में अपनी आत्मा की शक्ति से, हमें आपका अनुसरण करने में सहायता करें। हमें वैसा प्रेम करना सिखाओ जैसा तुम प्रेम करते हो, ताकि हम पृथ्वी पर तुम्हारा राज्य बना सकें। आमीन